वृक्ष पूजा की परिकाष्ठा

2010 की पूजा

2020 की पूजा

- पहले वृक्ष का जतन करो, बाद मे जप करो
- पहले वृक्ष लगावो, फीर बारीस की प्रार्थना करो
- प्रकृति बचावो, संस्कृति बचावो

- महावीर स्वामी, गौतम बुध्ध, क्रिष्ना -
  सब भगवान को मोक्ष-ध्यान पेड के नीचे ही प्राप्त हुआ

- हिन्दु संस्कृति, हर वनस्पतिकी महत्त्वता जानते हे,
  इसलिये कहते हे की हर पेड में प्राण हे, प्रभु हे.
- तुलसी विवाह, वड सावित्री, केवडा त्रीज
  हमे प्रकृति प्रेम सिखाते हे.

अंतिमधाम
www.antimdham.com
+91-98255-23478

- भारतीय संस्कृति में पीपल देववृक्ष है,
  इसके सात्विक प्रभाव के स्पर्श से अन्तः चेतना पुलकित और प्रफुल्लित होती है।

- स्कन्द पुराण में वर्णित है कि अश्वत्थ (पीपल) के
  मूल में विष्णु,
  तने में केशव,
  शाखाओं में नारायण,
  पत्तों में श्रीहरि और फलों में सभी देवताओं के
  साथ अच्युत सदैव निवास करते हैं।

- पीपल भगवान विष्णु का जीवन्त और पूर्णतःमूर्तिमान स्वरूप है।

- भगवान कृष्ण कहते हैं- समस्त वृक्षों में मैं पीपल का वृक्ष हूँ।
- स्वयं भगवान ने उससे अपनी उपमा देकर पीपल के देवत्व और दिव्यत्वको व्यक्त किया है।
- श्रीमद्भागवत् में वर्णित है कि द्वापरयुगमें परमधाम जाने से पूर्व
  योगेश्वर श्रीकृष्ण इस दिव्य पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान में लीन हुए।

- पीपल की सविधि पूजा-अर्चना करने से सम्पूर्ण देवता स्वयं ही पूजित हो जाते हैं।
- पीपल का वृक्ष लगाने वाले की वंश परम्परा कभी विनष्ट नहीं होती।
- पीपल की सेवा करने वाले सद्गति प्राप्त करते हैं।
- पीपल के वृक्ष के नीचे मंत्र, जप और ध्यान तथा सभी संस्कारों को शुभ माना गया है।

- यज्ञ में प्रयुक्त किए जाने वाले 'उपभृत पात्र' (दूर्वी, स्रुआ) पीपल-काष्ट से ही बनाए जाते हैं।
- पवित्रता की दृष्टि से यज्ञ में उपयोग की जाने वाली समिधाएं आम या पीपल की ही होती हैं।
- यज्ञ में अग्नि स्थापना के लिए ऋषिगण पीपल के काष्ठ और शमी की
  लकड़ी की रगड़ से अग्नि प्रज्वलित किया करते थे।

अंतिमधाम
www.antimdham.com
+91-98255-23478